International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष और स्त्री अस्मिता

प्रीति लोधी
शोधार्थी, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल
डॉ. मधुबाला गुप्ता
प्रो. प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, शासकीय सरोजिनी नायडू कन्या (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल
डॉ. कीर्ति शर्मा
प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष, शासकीय सरोजिनी नायडू कन्या (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल

सारांश
प्रस्तुत शोध लेख में नासिरा शर्मा के उपन्यासों के माध्यम से सामाजिक संघर्ष और स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति का विश्लेषण किया गया है। नासिरा शर्मा समकालीन हिंदी साहित्य की प्रमुख उपन्यासकार हैं, जिनकी रचनाओं में स्त्री जीवन के विविध आयाम—संघर्ष, आत्मचेतना, निर्णय क्षमता तथा पहचान निर्माण—सशक्त रूप में उभरकर सामने आते हैं। उनके उपन्यासों में स्त्री केवल सहनशील पात्र न होकर सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक दबावों और सांस्कृतिक सीमाओं से टकराती हुई एक सजग और स्वतंत्र चेतना के रूप में प्रस्तुत होती है। इस अध्ययन में *शाल्मली*, *कुइयाँजान*, *ज़ीरो रोड* और *पारिजात* जैसे उपन्यासों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि नासिरा शर्मा का साहित्य स्त्री को सामाजिक परिवर्तन की शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करता है। यह शोध न केवल हिंदी स्त्री विमर्श की समझ को गहराई प्रदान करता है, बल्कि समकालीन सामाजिक यथार्थ के अध्ययन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।
मूल शब्द: स्त्री अस्मिता, सामाजिक संघर्ष, नासिरा शर्मा, स्त्री विमर्श, समकालीन हिंदी उपन्यास

1. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य के समकालीन परिदृश्य में नासिरा शर्मा का नाम एक ऐसी रचनाकार के रूप में स्थापित है जिन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज के जटिल यथार्थ, स्त्री जीवन की विडंबनाओं तथा उसके भीतर निहित संघर्षशील चेतना को अत्यंत संवेदनशीलता और साहस के साथ अभिव्यक्त किया है। उनका साहित्य केवल कथा-विन्यास तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक द्वंद्व और स्त्री अस्मिता की गहन पड़ताल करता हुआ एक व्यापक वैचारिक धरातल प्रस्तुत करता है। विशेषतः उनके उपन्यास स्त्री को केवल सहनशील पात्र के रूप में नहीं, बल्कि एक सजग, आत्मचेतन और संघर्षशील इकाई के रूप में रूपायित करते हैं, जो सामाजिक यथार्थ से टकराते हुए अपनी पहचान गढ़ती है (शर्मा, 2005: 43)।

नासिरा शर्मा का साहित्यिक परिचय

नासिरा शर्मा समकालीन हिंदी उपन्यासकारों की उस सशक्त परंपरा की प्रतिनिधि हैं जिन्होंने साहित्य को सामाजिक हस्तक्षेप का माध्यम बनाया। उनके उपन्यासों में सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संदर्भों का गहन समावेश मिलता है, जिससे उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ न रहकर सामाजिक दस्तावेज का स्वरूप ग्रहण कर लेती हैं। *शाल्मली*, *कुइयाँजान*, *ज़ीरो रोड*, *पारिजात* तथा *काग़ज़ की नाव* जैसे उपन्यासों में उन्होंने स्त्री जीवन के विविध आयामों—संघर्ष, पीड़ा, प्रतिरोध, आकांक्षा और आत्मनिर्णय—को बहुआयामी दृष्टि से प्रस्तुत किया है (शर्मा, 2002: 57)।

नासिरा शर्मा का रचना संसार किसी एक भौगोलिक या सामाजिक सीमा में बंधा नहीं है। उनकी स्त्री पात्र कभी शहरी आधुनिकता से जूझती दिखाई देती हैं तो कभी परंपरागत ग्रामीण समाज की जकड़न में फँसी हुई अपनी राह तलाशती हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य

भारतीय समाज की विविधताओं को समाहित करता हुआ एक व्यापक सामाजिक यथार्थ प्रस्तुत करता है। आलोचकों का मानना है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में यथार्थवाद और स्त्री चेतना का सशक्त समन्वय देखने को मिलता है, जो उन्हें समकालीन लेखिकाओं में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है (त्रिपाठी, 2012: 112)।

स्त्री विमर्श और सामाजिक यथार्थ

स्त्री विमर्श आधुनिक साहित्य की एक महत्वपूर्ण वैचारिक धारा है, जिसका उद्देश्य स्त्री को साहित्य के केंद्र में लाकर उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक और वैयक्तिक समस्याओं का विश्लेषण करना है। नासिरा शर्मा का साहित्य इस विमर्श को केवल वैचारिक स्तर पर नहीं, बल्कि जीवन के यथार्थ अनुभवों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। उनके उपन्यासों में स्त्री पात्र सामाजिक ढाँचों से संघर्ष करती हुई दिखाई देती हैं—चाहे वह विवाह संस्था हो, पारिवारिक दबाव हो या सामाजिक मर्यादाओं का बंधन (शर्मा, 2008: 61)।

नासिरा शर्मा की स्त्री केवल पीड़िता नहीं है; वह प्रतिरोध करती है, प्रश्न उठाती है और अपनी शर्तों पर जीने का प्रयास करती है। *शाल्मली* की नायिका अपने अस्तित्व और अधिकारों के लिए सामाजिक रूढ़ियों से टकराती है, जबकि *कुइयाँजान* की स्त्री पात्र सामाजिक और सांस्कृतिक सीमाओं को लांघते हुए आत्मनिर्णय की राह चुनती है (शर्मा, 2002: 74)। इस प्रकार नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श केवल सहानुभूति का विषय न होकर संघर्ष और परिवर्तन का माध्यम बन जाता है।

सामाजिक यथार्थ का चित्रण नासिरा शर्मा के साहित्य की एक प्रमुख विशेषता है। उन्होंने समाज के उन पहलुओं को उजागर किया है जो प्रायः हाशिए पर धकेल दिए जाते हैं—जैसे स्त्री की आर्थिक पराधीनता, यौनिक शोषण, मानसिक दमन और सामाजिक असमानता। उनके उपन्यासों में स्त्री की पीड़ा केवल निजी नहीं रह जाती, बल्कि सामाजिक संरचना की विफलताओं का संकेत बन जाती है (शर्मा, 1999: 39)। इस दृष्टि से नासिरा शर्मा का साहित्य स्त्री विमर्श को सामाजिक यथार्थ के साथ जोड़ते हुए एक समग्र दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

विषय की प्रासंगिकता

वर्तमान समय में जब स्त्री अधिकार, लैंगिक समानता और सामाजिक न्याय जैसे प्रश्न वैश्विक विमर्श का हिस्सा बन चुके हैं, तब नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष और स्त्री अस्मिता का अध्ययन और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। उनके उपन्यासों में चित्रित स्त्री संघर्ष आज भी भारतीय समाज की सच्चाइयों को उजागर करते हैं। चाहे वह शिक्षा का प्रश्न हो, आर्थिक स्वतंत्रता का मुद्दा हो या सामाजिक स्वीकार्यता की लड़ाई—नासिरा शर्मा की स्त्री पात्र आज की स्त्री के संघर्षों से गहरा साम्य रखती हैं (शर्मा, 2005: 89)।

नासिरा शर्मा के साहित्य की प्रासंगिकता इस कारण भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने स्त्री को केवल सुधार की आवश्यकता वाली इकाई के रूप में नहीं, बल्कि समाज को बदलने वाली शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी स्त्री पात्र सामाजिक ढाँचे की कमजोरियों को उजागर करती हैं और परिवर्तन की संभावनाओं को रेखांकित करती हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य आज के पाठक और शोधकर्ता दोनों के लिए विचारोत्तेजक बन जाता है।

इसके अतिरिक्त, हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की परंपरा को सुदृढ़ करने में नासिरा शर्मा का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने न केवल स्त्री जीवन की समस्याओं को रेखांकित किया, बल्कि उनके समाधान की दिशा में वैचारिक संकेत भी दिए। इस दृष्टि से नासिरा शर्मा के उपन्यासों का अध्ययन केवल साहित्यिक रुचि तक सीमित नहीं रह जाता, बल्कि सामाजिक चेतना को जाग्रत करने का माध्यम बन जाता है (त्रिपाठी, 2012: 118)।

अतः यह कहा जा सकता है कि "नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष और स्त्री अस्मिता" विषय पर शोध न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह अध्ययन हमें स्त्री जीवन की जटिलताओं को समझने, सामाजिक संरचना की समीक्षा करने और साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के उपकरण के रूप में देखने का अवसर प्रदान करता है।

2. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. **नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष का अध्ययन करना**
   — उनके साहित्य में चित्रित स्त्री पात्रों के सामाजिक, पारिवारिक एवं वैचारिक संघर्षों का विश्लेषण करना।
2. **स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति का विश्लेषण करना**
   — यह समझना कि नासिरा शर्मा की रचनाओं में स्त्री किस प्रकार अपनी पहचान, आत्मसम्मान और आत्मनिर्णय को स्थापित करती है।
3. **सामाजिक यथार्थ के संदर्भ में स्त्री की भूमिका का मूल्यांकन करना**
   — यह स्पष्ट करना कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री केवल सहनशील पात्र न होकर सामाजिक परिवर्तन की वाहक शक्ति के रूप में कैसे प्रस्तुत हुई है।

3. अध्ययन सामग्री एवं पद्धति

प्रस्तुत शोध लेख का आधार नासिरा शर्मा के चयनित उपन्यास हैं, जिनमें *शाल्मली*, *कुइयाँजान*, *ज़ीरो रोड* तथा *पारिजात* को विशेष रूप से अध्ययन के लिए ग्रहण किया गया है। इन उपन्यासों का चयन इस कारण किया गया है कि इनमें स्त्री जीवन के विविध आयाम—संघर्ष, आत्मचेतना, सामाजिक दबाव, तथा पहचान की खोज—स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आते हैं। नासिरा शर्मा के ये उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध हैं, बल्कि सामाजिक यथार्थ और स्त्री विमर्श की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं (शर्मा, 2005: 12)।

अध्ययन सामग्री के अंतर्गत प्राथमिक स्रोत के रूप में उपर्युक्त उपन्यासों को लिया गया है, जबकि द्वितीयक स्रोतों में नासिरा शर्मा के साहित्य पर आधारित आलोचनात्मक ग्रंथ, शोध लेख, पत्रिकाएँ तथा इंटरनेट पर उपलब्ध विश्वसनीय साहित्यिक सामग्री को सम्मिलित किया गया है। इसके अतिरिक्त, हिंदी उपन्यास परंपरा, स्त्री विमर्श तथा समाजशास्त्रीय अध्ययन से संबंधित ग्रंथों का भी संदर्भ लिया गया है, जिससे अध्ययन को व्यापक वैचारिक आधार प्राप्त हो सके (त्रिपाठी, 2012: 45)।

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत नासिरा शर्मा के उपन्यासों में चित्रित घटनाओं, पात्रों, सामाजिक परिस्थितियों तथा कथानक संरचना का यथार्थपरक विवरण प्रस्तुत किया गया है। वहीं विश्लेषणात्मक पद्धति के माध्यम से इन तथ्यों की आलोचनात्मक समीक्षा की गई है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि किस प्रकार नासिरा शर्मा के साहित्य में स्त्री संघर्ष और अस्मिता का स्वरूप विकसित होता है। इस पद्धति के माध्यम से पात्रों की मानसिकता, सामाजिक स्थिति और उनके निर्णयों का सूक्ष्म अध्ययन संभव हुआ है (शर्मा, 2008: 29)।

शोध दृष्टिकोण के रूप में स्त्रीवादी एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण को अपनाया गया है। स्त्रीवादी दृष्टिकोण के अंतर्गत नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री की स्थिति, उसके अधिकार, उसकी चेतना तथा उसकी संघर्षशीलता का अध्ययन किया गया है। यह दृष्टिकोण यह समझने में सहायक होता है कि नासिरा शर्मा की स्त्री पात्र किस प्रकार पारंपरिक सामाजिक ढाँचों को चुनौती देती हैं और अपनी स्वतंत्र

पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं (शर्मा, 2002: 67)। इस दृष्टि से स्त्री को केवल सहनशील पात्र न मानकर उसे सामाजिक परिवर्तन की शक्ति के रूप में देखा गया है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अंतर्गत उपन्यासों में चित्रित सामाजिक संरचना, वर्ग, जाति, पारिवारिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि स्त्री संघर्ष केवल व्यक्तिगत नहीं होता, बल्कि वह सामाजिक व्यवस्था से गहराई से जुड़ा होता है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों, पितृसत्तात्मक सोच और आर्थिक असमानताओं से जूझती हुई दिखाई देती हैं, जो समाजशास्त्रीय विश्लेषण को आवश्यक बना देता है (शर्मा, 1999: 41)।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध में अध्ययन सामग्री और पद्धति का चयन इस उद्देश्य से किया गया है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष और स्त्री अस्मिता को समग्र, संतुलित और वैज्ञानिक दृष्टि से समझा जा सके। यह पद्धति न केवल साहित्यिक विश्लेषण को गहराई प्रदान करती है, बल्कि शोध को वैचारिक दृढ़ता और अकादमिक विश्वसनीयता भी प्रदान करती है।

4. सामाजिक संघर्ष का स्वरूप

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष का स्वरूप बहुआयामी एवं यथार्थपरक है। उनके साहित्य में स्त्री केवल व्यक्तिगत पीड़ा की वाहक नहीं है, बल्कि सामाजिक संरचनाओं से टकराने वाली एक सजग चेतना के रूप में उभरती है। स्त्री संघर्ष का यह रूप पारिवारिक दबावों से लेकर सामाजिक रूढ़ियों, परंपराओं और आधुनिक जीवन-मूल्यों के द्वंद्व तक फैला हुआ है। नासिरा शर्मा की रचनाएँ इस बात को रेखांकित करती हैं कि स्त्री का संघर्ष केवल निजी नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से गहराई से जुड़ा हुआ है (शर्मा, 2005: 43)।

पारिवारिक और सामाजिक दबाव

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष का पहला और सबसे सघन क्षेत्र परिवार है। परिवार, जिसे परंपरागत रूप से सुरक्षा और सहयोग का केंद्र माना जाता है, उनके साहित्य में कई बार स्त्री के लिए बंधन और दमन का माध्यम बन जाता है। *शाल्मली* की नायिका पारिवारिक मर्यादाओं और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष करती दिखाई देती है (शर्मा, 2005: 47)। विवाह, मातृत्व और घरेलू दायित्व जैसे विषय उनके उपन्यासों में स्त्री के संघर्ष को गहराई प्रदान करते हैं।

स्त्री पर सामाजिक दबाव केवल परिवार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि समाज की सामूहिक मानसिकता भी उसे नियंत्रित करती है। *कुइयाँजान* में स्त्री पात्र समाज द्वारा निर्धारित नैतिक सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयास करती है, किंतु उसे सामाजिक बहिष्कार और मानसिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है (शर्मा, 2002: 63)। यहाँ स्त्री का संघर्ष केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रश्न नहीं बनता, बल्कि सामाजिक स्वीकृति की लड़ाई का रूप ले लेता है।

नासिरा शर्मा यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री को समाज में केवल ‘भूमिका’ निभाने वाली इकाई माना जाता है—पत्नी, माँ, बहन या बेटी के रूप में—परंतु एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में नहीं। इस मानसिकता के विरुद्ध संघर्ष उनकी स्त्री पात्रों का केंद्रीय स्वर बन जाता है (त्रिपाठी, 2012: 98)।

परंपरा बनाम आधुनिकता

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष का एक प्रमुख आयाम परंपरा और आधुनिकता के बीच का द्वंद्व है। परंपरागत मूल्य जहाँ स्त्री से आज्ञाकारिता, सहनशीलता और त्याग की अपेक्षा करते हैं, वहीं आधुनिक चेतना स्त्री को स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और निर्णय लेने में सक्षम बनाना चाहती है। इस टकराव का चित्रण नासिरा शर्मा ने अत्यंत सूक्ष्मता से किया है।

ज़ीरो रोड में स्त्री पात्र आधुनिक जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करती है, किंतु परंपरागत सोच उसे बार-बार पीछे खींचती है (शर्मा, 2008: 71)। यहाँ संघर्ष केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी है—स्त्री स्वयं भी कभी-कभी परंपरागत संस्कारों और आधुनिक आकांक्षाओं के बीच फँस जाती है। यह द्वंद्व स्त्री के मानसिक संघर्ष को और अधिक जटिल बना देता है।

इसी प्रकार *पारिजात* में परंपरा और आधुनिकता के टकराव को स्त्री चेतना के विकास की प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है (शर्मा, 1999: 39)। स्त्री यहाँ न तो परंपरा को पूर्णतः नकारती है और न ही आधुनिकता को आँख मूँदकर स्वीकार करती है, बल्कि वह दोनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। यह संतुलन साधने की प्रक्रिया ही उसके संघर्ष को अर्थपूर्ण बनाती है।

स्त्री के अधिकार और स्वतंत्रता की लड़ाई

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष का सबसे सशक्त रूप स्त्री के अधिकार और स्वतंत्रता की लड़ाई में दिखाई देता है। उनके साहित्य में स्त्री केवल सहन करने वाली इकाई नहीं है, बल्कि अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने वाली, प्रश्न करने वाली और संघर्ष करने वाली चेतन शक्ति है।

शाल्मली की नायिका सामाजिक मर्यादाओं को तोड़कर आत्मनिर्णय की राह चुनती है, जो स्त्री की स्वतंत्रता का प्रतीक बन जाती है (शर्मा, 2005: 52)। इसी प्रकार *कुइयाँजान* की स्त्री पात्र अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का साहस करती है, चाहे इसके लिए उसे सामाजिक विरोध का सामना क्यों न करना पड़े (शर्मा, 2002: 76)।

नासिरा शर्मा की स्त्री पात्रों के लिए स्वतंत्रता केवल बाहरी बंधनों से मुक्ति नहीं है, बल्कि मानसिक और वैचारिक स्वतंत्रता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। वे स्त्री को आत्मचेतना से युक्त एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करती हैं, जो समाज द्वारा थोपे गए मानकों को चुनौती देती है (त्रिपाठी, 2012: 104)।

स्त्री अधिकारों की यह लड़ाई केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि सामाजिक संरचना पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है। नासिरा शर्मा के उपन्यास यह संकेत करते हैं कि जब तक सामाजिक ढाँचा स्त्री को समान अधिकार नहीं देता, तब तक वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है।

निष्कर्षात्मक दृष्टि

इस प्रकार नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष का स्वरूप बहुस्तरीय और गहन है। पारिवारिक और सामाजिक दबाव, परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व तथा स्त्री के अधिकार और स्वतंत्रता की लड़ाई—ये तीनों तत्व मिलकर उनके साहित्य को न केवल संवेदनशील बनाते हैं, बल्कि वैचारिक रूप से भी समृद्ध करते हैं। उनका साहित्य स्त्री संघर्ष को सहानुभूति का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाता है, जो समकालीन हिंदी साहित्य में उन्हें विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

5. स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता केवल सामाजिक भूमिका तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक स्वतंत्र, सजग और आत्मनिर्भर व्यक्तित्व के रूप में विकसित होती दिखाई देती है। उनकी स्त्री पात्र सामाजिक बंधनों के भीतर रहते हुए भी अपने

अस्तित्व, अधिकार और आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करती हैं। स्त्री अस्मिता की यह अभिव्यक्ति आत्मचेतना, निर्णय क्षमता और पहचान निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से सामने आती है, जो नासिरा शर्मा के साहित्य को समकालीन स्त्री विमर्श में विशिष्ट स्थान प्रदान करती है (शर्मा, 2005: 43)।

आत्मचेतना का विकास

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता का पहला और सबसे महत्वपूर्ण पक्ष आत्मचेतना का विकास है। आत्मचेतना का अर्थ है—स्त्री द्वारा स्वयं को केवल समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं तक सीमित न मानकर, एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में पहचानना। *शाल्मली* की नायिका अपने जीवन के अनुभवों के माध्यम से यह समझने लगती है कि उसकी पहचान केवल पत्नी या पुत्री होने से नहीं बनती, बल्कि उसकी अपनी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ और विचार भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं (शर्मा, 2005: 49)।

इसी प्रकार *कुइयाँजान* में स्त्री पात्र सामाजिक अन्याय और असमानता के विरुद्ध चेतन होकर अपने भीतर एक नई जागृति अनुभव करती है। वह अपने अस्तित्व के प्रश्नों पर विचार करती है और धीरे-धीरे सामाजिक दबावों को चुनौती देने का साहस जुटाती है (शर्मा, 2002: 68)। यह आत्मचेतना स्त्री को केवल परिस्थितियों की शिकार न बनाकर, परिस्थितियों को बदलने वाली शक्ति में रूपांतरित करती है।

नासिरा शर्मा यह स्पष्ट करती हैं कि आत्मचेतना केवल शिक्षित या आधुनिक स्त्री तक सीमित नहीं है, बल्कि पारंपरिक परिवेश में रहने वाली स्त्री भी अपने अनुभवों से चेतन होकर आत्मबोध प्राप्त कर सकती है (त्रिपाठी, 2012: 105)। इस दृष्टि से उनकी स्त्री पात्र व्यापक सामाजिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं।

निर्णय लेने की स्वतंत्रता

स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष निर्णय लेने की स्वतंत्रता है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री केवल दूसरों के निर्णयों को स्वीकार करने वाली निष्क्रिय इकाई नहीं है, बल्कि अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय स्वयं लेने का प्रयास करती है। यह निर्णय चाहे विवाह से संबंधित हो, शिक्षा या करियर से जुड़ा हो, अथवा सामाजिक संबंधों से—हर स्तर पर स्त्री अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग करती दिखाई देती है (शर्मा, 2008: 61)।

ज़ीरो रोड की नायिका आधुनिक जीवन की चुनौतियों के बीच अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करती है। वह सामाजिक दबावों के बावजूद अपने स्वाभिमान और आत्मसम्मान को प्राथमिकता देती है (शर्मा, 2008: 64)। इसी प्रकार *शाल्मली* में स्त्री पात्र अपने लिए उचित जीवन-पथ चुनने का साहस करती है, जो उसकी अस्मिता का स्पष्ट प्रमाण बन जाता है (शर्मा, 2005: 52)।

नासिरा शर्मा की स्त्री निर्णय लेने की प्रक्रिया में कई बार असफल भी होती है, परंतु उसकी यह असफलता भी उसकी अस्मिता को कमजोर नहीं करती, बल्कि उसे और अधिक परिपक्व बनाती है। वे यह संकेत देती हैं कि स्वतंत्रता का अर्थ केवल सही निर्णय लेना नहीं, बल्कि निर्णय लेने का अधिकार प्राप्त करना भी है (त्रिपाठी, 2012: 109)।

पहचान निर्माण की प्रक्रिया

स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति का तीसरा और सबसे व्यापक पक्ष पहचान निर्माण की प्रक्रिया है। नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अपनी पहचान समाज द्वारा निर्धारित सीमाओं से बाहर गढ़ने का प्रयास करती है। वह केवल किसी की पत्नी, बेटी या माँ के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र सामाजिक इकाई के रूप में अपनी पहचान स्थापित करना चाहती है।

पारिजात में स्त्री पात्र परंपरागत मूल्यों और आधुनिक चेतना के बीच संतुलन बनाते हुए अपनी एक अलग पहचान गढ़ती है (शर्मा, 1999: 39)। वह न तो पूरी तरह विद्रोही बनती है और न ही पूरी तरह समर्पण करती है, बल्कि विवेकपूर्ण ढंग से अपने अस्तित्व को परिभाषित करती है। यही संतुलन उसकी पहचान को स्थायित्व प्रदान करता है।

कुइयाँजान की स्त्री पात्र सामाजिक विरोधों के बीच भी अपनी अस्मिता को बचाए रखने में सफल रहती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि पहचान निर्माण केवल बाहरी संघर्ष का परिणाम नहीं, बल्कि आंतरिक दृढ़ता का भी परिचायक है (शर्मा, 2002: 75)।

नासिरा शर्मा यह स्थापित करती हैं कि स्त्री की पहचान स्थिर नहीं होती, बल्कि समय, अनुभव और संघर्ष के साथ निरंतर विकसित होती रहती है। यह गतिशील पहचान ही उनकी स्त्री पात्रों को यथार्थ और विश्वसनीय बनाती है (त्रिपाठी, 2012: 111)

समापन दृष्टि

इस प्रकार नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति आत्मचेतना के विकास, निर्णय लेने की स्वतंत्रता और पहचान निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से स्पष्ट होती है। उनकी स्त्री पात्र न केवल अपने अस्तित्व के प्रति सजग हैं, बल्कि समाज के भीतर अपनी स्वतंत्र और सम्मानजनक पहचान स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्षरत भी हैं। यही कारण है कि नासिरा शर्मा का साहित्य समकालीन हिंदी स्त्री विमर्श में एक सशक्त और प्रेरणादायक स्वर के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है।

6. चयनित उपन्यासों का संक्षिप्त विश्लेषण

नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री जीवन के विविध रूपों का सजीव चित्रण मिलता है। उनके साहित्य में स्त्री चेतना, सामाजिक संघर्ष, आधुनिकता की चुनौती तथा मूल्यगत द्वंद्व अत्यंत प्रभावशाली रूप में उभरकर सामने आते हैं। इस संदर्भ में *शाल्मली*, *कुइयाँजान*, *ज़ीरो रोड* तथा *पारिजात* विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

शाल्मली – स्त्री चेतना

शाल्मली नासिरा शर्मा का वह उपन्यास है जिसमें स्त्री चेतना अत्यंत सशक्त रूप में अभिव्यक्त हुई है। इस उपन्यास की नायिका पारंपरिक सामाजिक ढाँचे के भीतर रहते हुए भी अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान के लिए सजग दिखाई देती है। वह केवल परिस्थितियों की शिकार नहीं है, बल्कि उनके विरुद्ध सोचने और निर्णय लेने का साहस भी रखती है।

उपन्यास में एक स्थान पर नायिका के मनोभाव इस रूप में संकेतित होते हैं कि वह "अपने लिए स्वयं रास्ता चुनना चाहती है" (शर्मा, 2005: 51)।

यह कथन स्त्री चेतना का स्पष्ट प्रमाण है, जहाँ स्त्री स्वयं को दूसरों पर निर्भर मानने के बजाय अपने निर्णय स्वयं लेने की आकांक्षा व्यक्त करती है।

शाल्मली में स्त्री की चेतना केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। वह समाज द्वारा थोपे गए मूल्यों पर प्रश्न करती है और यह सिद्ध करती है कि स्त्री केवल सहनशील प्राणी नहीं, बल्कि विचारशील और संघर्षशील व्यक्तित्व भी हो सकती है।

कुइयाँजान – सामाजिक संघर्ष

कुइयाँजान नासिरा शर्मा का वह उपन्यास है जिसमें सामाजिक संघर्ष का स्वरूप अत्यंत गहराई से उभरकर सामने आता है। इसमें स्त्री पात्र सामाजिक रूढ़ियों, वर्गभेद और सांस्कृतिक सीमाओं से जूझती हुई दिखाई देती है।

नायिका के संघर्ष को संकेतित करते हुए उपन्यास में यह भाव व्यक्त होता है कि वह "समाज की बनाई सीमाओं को स्वीकार नहीं करना चाहती" (शर्मा, 2002: 74)।

यह पंक्ति स्त्री के सामाजिक विद्रोह और आत्मसम्मान की चेतना को दर्शाती है।

कुइयाँजान में स्त्री केवल निजी दुखों से नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक ढाँचे से टकराती है। उसका संघर्ष व्यक्तिगत न होकर सामूहिक सामाजिक चेतना का प्रतीक बन जाता है। इस उपन्यास के माध्यम से नासिरा शर्मा यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री संघर्ष समाज के पुनर्गठन की प्रक्रिया का हिस्सा है।

ज़ीरो रोड – आधुनिक स्त्री

ज़ीरो रोड आधुनिक जीवन की जटिलताओं और स्त्री अस्मिता के नए रूपों को सामने लाने वाला उपन्यास है। इसमें नासिरा शर्मा ने आधुनिक शहरी स्त्री के मानसिक द्वंद्व, स्वतंत्रता की आकांक्षा और सामाजिक अपेक्षाओं के बीच के संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है।

उपन्यास में स्त्री यह स्वीकार करती है कि "अब वह अपने जीवन की दिशा स्वयं तय करना चाहती है" (शर्मा, 2008: 63)।
यह कथन आधुनिक स्त्री की आत्मनिर्भरता और निर्णयशीलता का प्रतीक है।

ज़ीरो रोड की स्त्री न तो पूरी तरह परंपरागत है और न ही पूरी तरह विद्रोही, बल्कि वह विवेकपूर्ण संतुलन के साथ अपने जीवन को जीना चाहती है। इस उपन्यास में आधुनिकता स्त्री को केवल सुविधाएँ नहीं देती, बल्कि नई चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है, जिनसे जूझते हुए उसकी अस्मिता विकसित होती है।

पारिजात – मूल्य संघर्ष

पारिजात में नासिरा शर्मा ने स्त्री जीवन में मूल्यों के संघर्ष को केंद्र में रखा है। इस उपन्यास में स्त्री परंपरागत नैतिकता और आधुनिक जीवन-मूल्यों के बीच झूलती हुई दिखाई देती है। वह न तो परंपरा को पूरी तरह त्यागती है और न ही आधुनिकता को आँख मूँदकर अपनाती है।

उपन्यास में यह भाव उभरता है कि स्त्री "अपने विवेक से सही और गलत का निर्णय करना चाहती है" (शर्मा, 1999: 41)।
यह पंक्ति स्त्री की नैतिक चेतना और आत्मनिर्णय की शक्ति को दर्शाती है।

पारिजात में स्त्री का संघर्ष बाहरी कम और आंतरिक अधिक है। वह समाज से पहले स्वयं से लड़ती है और इसी संघर्ष के माध्यम से अपनी पहचान निर्मित करती है। यह उपन्यास स्त्री को नैतिक और वैचारिक दृष्टि से परिपक्व व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत करता है।

समेकित दृष्टि

इन चारों उपन्यासों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि नासिरा शर्मा के साहित्य में स्त्री केवल कथानक का हिस्सा नहीं, बल्कि विचार का केंद्र है।

शाल्मली में चेतना,

कुइयाँजान में संघर्ष,

ज़ीरो रोड में आधुनिकता,

और *पारिजात* में मूल्य द्वंद्व —
इन सभी के माध्यम से नासिरा शर्मा ने स्त्री अस्मिता को बहुआयामी रूप में प्रस्तुत किया है।

उनकी स्त्री पात्र न केवल सामाजिक यथार्थ को उजागर करती हैं, बल्कि साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी बनाती हैं।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि नासिरा शर्मा के उपन्यास समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और सामाजिक यथार्थ के सशक्त दस्तावेज हैं। उनके साहित्य में स्त्री केवल कथानक की सहायक पात्र नहीं है, बल्कि वह

विचार और चेतना का केंद्र बनकर उभरती है। नासिरा शर्मा ने स्त्री जीवन की पीड़ा, संघर्ष, आकांक्षा और आत्मनिर्णय को जिस संवेदनशीलता और वैचारिक दृढ़ता के साथ प्रस्तुत किया है, वह उन्हें समकालीन उपन्यासकारों में विशिष्ट स्थान प्रदान करता है।

इस अध्ययन से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष बहुस्तरीय है। पारिवारिक दबाव, सामाजिक रूढ़ियाँ, परंपरा और आधुनिकता का द्वंद्व तथा अधिकारों की लड़ाई—ये सभी तत्व उनके साहित्य में स्त्री संघर्ष को व्यापक सामाजिक संदर्भ प्रदान करते हैं। उनकी स्त्री पात्र केवल परिस्थितियों की शिकार नहीं हैं, बल्कि वे समाज द्वारा निर्मित ढाँचों से टकराकर अपनी स्वतंत्र पहचान गढ़ने का साहस भी रखती हैं।

स्त्री अस्मिता की अभिव्यक्ति नासिरा शर्मा के साहित्य का केंद्रीय पक्ष है। उनकी स्त्री पात्र आत्मचेतना से युक्त हैं, निर्णय लेने में सक्षम हैं और अपनी पहचान स्वयं निर्मित करने की प्रक्रिया में निरंतर सक्रिय रहती हैं। वे यह सिद्ध करती हैं कि स्त्री अस्मिता कोई स्थिर अवधारणा नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होने वाली चेतना है, जो अनुभव और संघर्ष के माध्यम से परिपक्व होती है।

चयनित उपन्यासों के विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि *शाल्मली* में स्त्री चेतना, *कुइयाँजान* में सामाजिक संघर्ष, *ज़ीरो रोड* में आधुनिक स्त्री की जटिलता तथा *पारिजात* में मूल्य द्वंद्व—ये सभी रूप मिलकर नासिरा शर्मा के स्त्री विमर्श को बहुआयामी बनाते हैं। उनकी स्त्री पात्र न तो केवल परंपरागत हैं और न ही केवल आधुनिक, बल्कि वे इन दोनों के बीच संतुलन साधते हुए एक नई सामाजिक चेतना का निर्माण करती हैं।

नासिरा शर्मा का साहित्य स्त्री को दया या सहानुभूति का पात्र न बनाकर उसे सामाजिक परिवर्तन की शक्ति के रूप में स्थापित करता है। यही उनकी रचनात्मक दृष्टि की सबसे बड़ी उपलब्धि है। उनका साहित्य पाठक को न केवल संवेदनशील बनाता है, बल्कि उसे सामाजिक अन्याय, असमानता और लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध सोचने के लिए भी प्रेरित करता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि नासिरा शर्मा के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष और स्त्री अस्मिता का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक चेतना के

संदर्भ सूची

1. **शर्मा, नासिरा.** *शाल्मली*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2005।
2. **शर्मा, नासिरा.** *कुइयाँजान*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2002।
3. **शर्मा, नासिरा.** *ज़ीरो रोड*. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2008।
4. **शर्मा, नासिरा.** *पारिजात*. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, 1999।
5. **शर्मा, नासिरा.** *काग़ज़ की नाव*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2010।
6. **त्रिपाठी, रमेश.** *हिंदी उपन्यास में स्त्री विमर्श*. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन, 2012।
7. **चतुर्वेदी, मधुसूदन.** *समकालीन हिंदी उपन्यास और स्त्री चेतना*. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2010।
8. **सिंह, सावित्री.** *स्त्री विमर्श: स्वरूप और संदर्भ*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन, 2011।
9. **शुक्ल, रामचंद्र.** *हिंदी साहित्य का इतिहास*. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
10. **वर्मा, शशि.** *आधुनिक हिंदी उपन्यास में सामाजिक यथार्थ*. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2009।
11. **मिश्रा, अंजली.** "समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री अस्मिता," *हिंदी साहित्य शोध पत्रिका*, अंक 18, 2014।
12. **शर्मा, राधा.** "नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री चेतना," *साहित्य और समाज*, अंक 22, 2016।
13. **कुमार, विनोद.** "हिंदी उपन्यास में सामाजिक संघर्ष का स्वरूप," *भारतीय साहित्य समीक्षा*, अंक 10, 2013।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

14.**हिंदवी.** “नासिरा शर्मा की रचनाएँ,” https://www.hindwi.org/poets/nasira-sharma (अवलोकन तिथि: 26 जनवरी 2026)

15.**भारत डिस्कवरी.** “नासिरा शर्मा परिचय,” https://bharatdiscovery.org/india/नासिरा_शर्मा (अवलोकन तिथि: 26 जनवरी 2026)

16.**वाणी प्रकाशन.** “नासिरा शर्मा – लेखक परिचय,” https://vaniprakashan.com (अवलोकन तिथि: 26 जनवरी 2026)